मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -1 | अंक - 2 | जयपुर | जुलाई - सितम्बर 2012 | पृष्ठ संख्या - 4

निदेशक की कलम से...

आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट्ट

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर (राजस्थान)

हमारे देश की राजभाषा हिंदी में प्रकाशित संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका मालवीय प्रकाश के दूसरे अंक के जरिये आप से सभी से दुबारा जुड़ने का यह अवसर मेरे लिये अति हर्ष का विषय है।

मैं, इस मौके पर संस्थान के नव आंगतुक छात्रों व शिक्षकों का हार्दिक स्वागत करता हूँ और शिक्षको से उम्मीद करता हूँ कि वे संस्थान के मापदण्डों पर खरे उतरने और (अंतराष्ट्रीय मानकों के) नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा जो नवीनतम तकनीकी ज्ञान से भी जुड़ी हो प्रदान करने की दिशा में कार्य करें। शिक्षणगण शिक्षण के साथ-साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान भी करें ताकि हमारे संस्थान के विद्यार्थी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम अनुसंधानों की जानकारी प्राप्त कर सकें तथा भविष्य की चुनौतियों को प्रभावी ढंग से और कुशलता से पूरी कर पायें।

किसी भी संस्थान को सफलता की ऊँचाईयों पर ले जाने की जिम्मेदारी व कर्तव्य, संस्थान के सभी सदस्यों की होती है, इसलिये हर एक कर्मचारी को अपनी जिम्मेदारियों के महत्व को समझना चाहिये और अपने दैनिक कार्य कलापों में इस लक्ष्य को ध्यानमें रखते हुये कार्य करना चाहिये।

एक अच्छे शिक्षके में जिन गुणों का होना अति आवश्यक हैं उनमें विषय वस्तु का विस्तृत ज्ञान, बेहतरीन संचार कौशल, संगठनात्मक कौशल, प्रभावी संप्रेषण कला, छात्रों को प्रेरित करने की नेतृत्व क्षमता तथा विद्यार्थी वर्ग के लिये एक आदर्श व्यक्तित्व बनने की काबलियत होना प्रमुख हैं। समाज और विद्यार्थी वर्ग शिक्षकों से नैतिकता और आदर्श व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं अतः शिक्षकों को चाहिये कि वह इनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने को ही अपने जीवन का ध्येय बनायें।

शिक्षक की जिम्मेदारी पढ़ाने व शोध करने से भी कहीं ज्यादा होती है। उसे एक समाज सुधारक, नई अवधारणा का जनक, सच्चा अन्वेषक, नैतिक मूल्य संवर्धित करने वाला तथा सहनशील व प्रेममयी होना चाहिये इसी वजह से शिक्षण सबसे अच्छा पेशा एवं शिक्षक समाज का असली पथ प्रदर्शक होता है।

शिक्षा में भी अन्य पेशों की तरह सतत सुधार जरूरत होती है। नवीनतम जानकारियों को शामिल करते रहना चाहिये समय का सदुपयोग और उसकी पाबंदी पर ध्यान देना चाहिये।

विद्यार्थियों के लिये यह जरूरी है कि वे अपने गुरु का आदर करें। गुरु का अर्थ होता है अंधकार को मिटाने वाला अर्थात् अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करने वाला प्रकाश। किसी भी प्रकार की शिक्षा, कला या गुण को सीखने के लिये पात्रता भी होनी चाहिये जो गुरु के प्रति श्रद्धा व विश्वास रखने से हासिल होती है।

मैं आप सभी संस्थान सदस्यों के उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा शिक्षक एवं विद्यार्थी वर्ग से यह उम्मीद करता हूँ कि वे अपने बीच में अपने कर्तव्यों के निर्वहन के साथ-साथ स्वयं के और संस्थान के चहुँमुखी विकास में भी सहभागी बनेगें ताकि वे एक जिम्मेदार व पूर्ण व्यक्तित्व के धनी बन सकें।

मुझे आशा है कि राज भाषा के प्रचार प्रसार व हिंदी भाषा व साहित्य को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से ''मालवीय प्रकाश'' अपने प्रयासों में सफल होगा। संस्थान की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

- आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट्ट

संस्थान की प्रमुख गतिविधियाँ ...

1. संस्थान अपने 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन (सितंबर 2012 से अगस्त 2013) करने जा रहा है। इसका उद्घाटन 1 सितंबर 2012 को किया जायेगा जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार माननीय श्री कपिल सिब्बल जी मुख्य अतिथि होंगे। इस दौरान कई तरह के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें।
2. दिनांक 12 जून 2012 को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री नवीन कुमार बोहरा एवं वरिष्ठ अनुवादक, श्री निखिल अरोड़ा ने संस्थान का दौरा किया। इस द्विसदस्यीय निरीक्षण दल ने संस्थान में राजभाषा में किये जा रहे राजकीय कार्यों का ब्यौरा लिया एवं हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए की जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी ली एवं राजभाषा समिति के तत्वावधान में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका '**मालवीय प्रकाश**' के हिन्दी सशक्तिकरण में योगदान के लिए सराहना की। निरीक्षण दल ने संस्थान द्वारा राजभाषा में निष्पादित कार्यों पर एक प्रश्नावली भी भरवाई। दल के सदस्यों ने संस्थान के पुस्तकालय, स्थापना शाखा, रसायन अभियांत्रिकी विभाग, एवं संस्थान परिसर का भी अवलोकन किया। निरीक्षण दल ने इस बात पर बल दिया कि दैनिक राजकीय कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो। निरीक्षण दल के सदस्यों ने निदेशक महोदय, अधिष्ठाता संकाय, राजभाषा समन्वयक, कुलसचिव, उप कुलसचिव (प्रशासन) एवं सहायक कुलसचिव स्थापना और सभी राजभाषा सदस्यों से भेंट की।

शेष पृष्ठ 2 पर...

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी

कमजोर आदमी हर काम को असंभव समझता है और वीर हर असंभव कार्य को साधारण समझता है।

मदन मोहन मालवीय

एक अनमोल शख्सियत

गतांक में पाठकों का परिचय पंडित मदनमोहन मालवीय जी के कार्यक्षेत्र, हिन्दी को बोलचाल की भाषा से ऊपर उठाकर राजभाषा का दर्जा दिलाने की उनकी मुहिम, देश को स्वतंत्र कराने के उनके अथक प्रयासों, शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के उनके स्वप्न व उसको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में साकार करने तथा उनके जीवन दर्शन से कराया गया था। इस अंक में आप उनके जीवन परिचय से साक्षात्कार करेंगे।

पंडित मदनमोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्में पंडितजी के पिता का नाम श्री बृजनाथ मालवीय एवं माता का नाम मूना देवी था। सात भाई-बहन वाले परिवार में उनका पांचवां स्थान था। उनके पूर्वज संस्कृत के विद्वान हुआ करते थे और चूंकि वे मालवा प्रदेश से संबंध रखते थे इसलिए मालवीय जी उपनाम से जाने जाने लगे। मालवीय जी के पिता संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और अपनी आजीविका के लिए लोगों को भगवद्गीता पढ़ कर सुनाया करते थे। पंडित जी ने भी पांच वर्ष की आयु से संस्कृत पढ़ना शुरू कर दी थी। उन्होंने सबसे पहले पंडित हरदेव धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला से प्राथमिक शिक्षा ली, फिर विद्या वरदिनी सभा के एक विद्यालय से तत्पश्चात इलाहाबाद जिला विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। वर्ष 1879 में मैट्रिक की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ली (जो उन दिनों म्यूर सेन्ट्रल कॉलेज के नाम से जाना जाता था।) शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि 8या 9 वर्ष की उम्र से ही 'मकरन्द' नाम से कवितायें लिखा करते थे जो कि उस समय की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती थीं।

शेष पृष्ठ 3 पर...

सम्पादकीय...

सर्वप्रथम संस्थान के सदस्यों को '**मालवीय प्रकाश**' के प्रथम अंक को सराहने, समय-समय पर अपने सुझावों से हमें अवगत कराने एवं प्रकाशित रचनाओं को प्रोत्साहित करने के लिये बहुत बहुत साधुवाद। आपके समक्ष इस पत्रिका का दूसरा अंक प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यंत खुशी का अनुभव हो रहा है। मेरा आपसे आग्रह है कि आप भविष्य में भी अपने सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराते रहें ताकि हम इस पत्रिका को बेहतर रूप में प्रस्तुत कर सकें।

इस अंक से प्रकाशक मण्डल ने उत्कृष्ट रचनाओं को पुरुस्कृत करने का निर्णय लिया है। इस नई पहल को ध्यान में रखते हुये सभी पाठकगण से अनुरोध है कि कृपया अपनी सम-सामयिक एवं स्वरचित सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को हम तक अवश्य पहुँचायें। भाषा इंसान को इंसान से जोड़ती है और भाषा की शुद्धता ही उसकी आत्मा होती है अतः हमें अपनी रचनाओं में इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये ताकि वह अनुभव व ज्ञान की सन्तुलित अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

मैं चाहूँगी कि हिंदी भाषा में रूचि एवं दक्षता रखने वाले सभी संस्थान सदस्य एवं विद्यार्थी, संस्थान को प्रगति के शिखर पर पहुँचाने की दिशा में ले जाने हेतु अपने विचारों एवं सुझावों को इस पत्रिका के माध्यम से हमें अवश्य अवगत करायें। हिंदी जैसी समृद्ध व सशक्त भाषा को पुनः स्थापित करने की दिशा में निश्चित ही यह एक असरदार व सराहनीय प्रयास होगा।

अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ, सस्नेह...

भवदीया

डॉ. ज्योति जोशी,

सम्पादक एवं सह-आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

9413971604, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से...	1	21वीं सदी में हिन्दी की हकीकत और...	3
महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी	1	कविता :उलझन और विश्वास	3
सम्पादकीय	1	कुरआन : सम्पूर्ण मानव जाति के लिए...	4
संस्थान की प्रमुख गतिविधियां	1	आदर्श विद्यार्थी के लक्षण	4
इतिहास के झरोखे से	2	कविता : धर्म-प्रेम-शान्ति	4
ज्यों की त्यों धर दीनी...	2	अनाम रिश्तों का ताना-बाना	4
कविता : जीवन संघर्ष	2	कविता : जीवन को संवार दो	4

जियो ऐसे कि जैसे तुम्हें कल ही मरना हो, और सीखो ऐसे जैसे कि तुम्हें सदा जीवित रहना हो।

इतिहास के झरोखे से..

राजस्थान के लोक देवता

राजस्थान की संस्कृति सहिष्णु, उदार, बहुरंगी और विविधता लिए हुए रही है। शक्ति व भक्ति की इस सांस्कृतिक विरासत में सर्वपंथ समादर भाव का आलोक रहा है। वीर पूजा और लोक देवताओं के प्रति आस्था की इस समृद्ध परंपरा ने राजस्थानी संस्कृति को वैविध्य प्रदान किया है। यहाँ के कुछ प्रसिद्ध लोक देवताओं में गोगाजी, रामदेवजी, देवनारायण जी, तेजाजी, पाबूजी, हरबूजी आदि प्रमुख है।

1. गोगाजी – गोगाजी राजस्थान के प्रमुख लोक देवताओं में से एक हैं। इनकी मान्यता न केवल राजस्थान में अपितु गुजरात, पंजाब, हरियाणा, मालवा, हिमाचल व उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में भी है। मुख्यत: गोगाजी को हिन्दु धर्म के लोग अपना लोक देवता मानते हैं परन्तु मुस्लिम संप्रदाय में भी ये 'गोगापीर' के नाम से माने जाते हैं। गोगाजी हिन्दू व मुस्लिम एकता का अद्भुत प्रतीक हैं। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इनके मुख्य मंदिर में दो पुजारी हैं जिनमें से एक हिन्दु है व एक मुसलमान। इन्हें सर्पों का देवता भी कहा जाता है। एक अन्य लोकप्रिय नाम के रूप में इन्हें 'जाहरपीर' या 'जाहरवीर' भी कहा जाता है। इनका समय 11वीं शताब्दी माना जाता है। अश्व पर सवार मूर्ति के रूप में इनकी पूजा होती है। इनकी स्मृति में हनुमानगढ़ में गोगानवमी का मेला लगता है।

2. रामदेवजी – वि.सं. 15वीं शताब्दी में पश्चिमी राजस्थान के पोकरण जिले के जूंजाल गाँव में रामदेवजी का जन्म हुआ। साहित्यक स्त्रोतों के अनुसार इनके पिता अजमल तँवर, माता मैणा दे व पत्नी नैतल दे थी। इन्हें श्रीकृष्ण भगवान का अवतार भी माना जाता है। राजस्थान में रामदेवजी को विशेष रूप से मेघवाल समुदाय का लोक देवता माना जाता है। इनके अनुयायियों में मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश एवं पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत के लोग आते हैं।

बाबा रामदेव की जयंती हर वर्ष भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनायी जाती है। इस दिन मुख्य रूप से रामदेवरा, जैसलमेर में मेला लगता है।

3. तेजाजी – तेजाजी का जन्म वि.सं. 1130 में माघ शुक्ल चतुर्दशी को नागवंशी जाट परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम चौधरी ताहर व माता का नाम सुगना था।

वीर तेजाजी एक महान् संत थे। तेजाजी के मंदिर राजस्थान में बड़ी संख्या में निर्मित हैं। यह मान्यता है कि अगर सर्पदंश से पीड़ित कोई भी व्यक्ति तेजाजी की समाधि पर चला जाता है या तेजाजी के नाम का ताबीज पहन लेता है तो वह ठीक हो जाता है। भारतीय डाक विभाग ने 7 सितंबर 2011 को तेजाजी दशमी के अवसर पर तेजाजी का एक स्मारक डाक टिकट जारी किया है।

4. जम्भोजी – जम्भोजी या गुरू जम्भेश्वर ने 1451 ई० में राजस्थान के पीपासर गाँव में जन्म लिया था। ये विश्नोई समाज के संस्थापक थे। इन्होंने पर्यावरण व जीव-जन्तुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया था। इनके पिता का नाम लोहत जी पँवार व माता का नाम हंसा देवी था। उन्होंने अपने जीवन के 27 वर्ष भगवान श्रीकृष्ण की भाँति एक ग्वाले की तरह गुजारे। संयोगवश दोनों की जन्मतिथि भी एक ही है- जन्माष्टमी। 34 वर्ष की आयु में जम्भोजी ने विश्नोई संप्रदाय की स्थापना की। इनके उपदेश एक काव्य में संग्रहित हैं, जिसे 'शबदवाणी' कहा जाता है। विश्नोई संप्रदाय मुख्य रूप से 29 आज्ञाओं का पालन करता है। विश्नो-बीस +नी। इनमें से 8 जैवविविधता का संरक्षण करने के लिए व पशुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए हैं। 7 एक स्वस्थ सामाजिक व्यवहार के निर्देश प्रदान करते हैं। 10 व्यक्तिगत स्वच्छता व अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए निर्देशित हैं। अन्य 4 दैनिक पूजा करने के नियम का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

– दिव्यांशु गोयल
चतुर्थ वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

पृष्ठ 1 का शेष...

संस्थान की प्रमुख गतिविधियाँ ...

निरीक्षण दल ने राजभाषा समिति द्वारा समय समय पर आयोजित हिंदी के विविध कार्यक्रमों की सराहना की और राजकीय कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के बारे में अपने अमूल्य दिशा निर्देश एवं सुझाव दिये। डॉ. राजकुमार व्यास ने हिन्दी राजभाषा समिति के क्रिया कलापों की विस्तृत जानकारी दी।

2. दिनांक 28 जुलाई 2012 को मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में महिला प्रकोष्ठ के द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय : **महिला सशक्तिकरण में विशाखा निर्णय का योगदान** था। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक आचार्य (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट ने किया। इस अवसर पर प्रमुख वक्त्र के रूप में राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष प्रोफेसर लाड कुमारी जैन, प्रोफेसर पवन सुराणा, प्रोफेसर रेणुका पामेचा एवं कविता श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यशाला की विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर लाड कुमारी जैन का सम्मान किया गया। कार्यशाला में संस्थान के शैक्षणिक व अशैक्षणिक वर्ग के कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन आचार्य (डॉ.) श्रीमती रश्मि जैन (गणित विभाग) के निर्देशन में किया गया।

3. 11 अगस्त 2012 को संस्थान के निदेशक द्वारा नव आगंतुक संकाय सदस्यों का स्वागत किया एवं उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश दिये। प्रो. (डॉ.) अशोक शर्मा द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

5. दिनांक 17-21 अक्टूबर 2012 को 16वाँ आडवाणी स्मृति बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। इस प्रतियोगिता में देश की कई नामी-गिरामी टीमें भाग लेंगी। यह प्रतियोगिता सर्वप्रथम 1975 में मालवीय क्षेत्रीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जयपुर के तत्कालीन प्राचार्य एवं शिक्षक प्रोफेसर आर.के. आडवाणी की स्मृति में आंरभ की गई थी, तब ही से विद्यार्थीगण अपने शिक्षकों के सम्मान में इसका आयोजन करते आ रहे हैं।

6. 26 अगस्त को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का संदेश देने के उद्देश्य से संस्थान में एक मिनी मैराथन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री प्रतिम तंबोली एवं निदेशक (डॉ.) इन्द्र कृष्ण भट ने पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने की अपील के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। डेयरी मंत्री माननीय श्री बाबूलाल नागर ने विजेताओं को पुरुस्कार वितरण किये।

जीवन संघर्ष

हर ख़्वाब ज़िंदगी की नज़र अंदाज़ कर लेता हूँ
मैं राह में चलते हुए, आज भी हर किसी से प्यार कर लेता हूँ।
मिलते है दुनियाँ में धोखे, ठगा गया मैं, ऐसे कितने आये मौके,
दूसरों की मुस्कुराहटों के लिए,
मैं टूटे रिश्तों पर फिर से एतबार कर लेता हूँ।
मैं राह में चलते हुए आज भी हर किसी से प्यार कर लेता हूँ।
बेटर्ट इस दुनियाँ में रिश्ते नातों का कोई मोल नहीं,
बेबस है ज़िन्दगी, यहाँ जज़्बातों का कोई तोल नहीं।

इन धूमिल होती रातों में, अज्ञानी मुखौटा ओढ़ लेता हूँ।
यहाँ जगह-जगह पर ढोंगी बसा, ईश्वर के नाम पर स्वांग रचा,
भर-भर गठरियाँ ले जाते है, सच्ची वो बात छुपाते हैं।
जानत हम पर मानत क्यों, जब मन ही मैला होने चला,
जब वस्त्र धरे श्वेत, तब व्यावट स्थान क्यों?
मूर्खों की इस टोली की, मैं अगुवाई कर लेता हूँ
हर ख़्वाब ज़िंदगी की नज़र अंदाज़ कर लेता हूँ
मैं राह में चलते हुए आज भी, हर किसी से प्यार कर लेता हूँ।

– राकेश कुमार वर्मा
(बी.टेक चतुर्थ वर्ष-रासायनिक अभियांत्रिकी)

ज्यों की त्यों धर दीनी ...

– महेश स्वामी

लगभग आठ वर्ष पूर्व एक कार्यक्रम में हबीब तनवीर साहब अपनी नाटक मण्डली के साथ किसी विद्यालय में नाटक का मंचन करने पधारे थे, सो उनसे मिलने व नाटक कवर करने मैं काफी पहले ही वहाँ जा पहुँचा। नाटक शुरू होने से पूर्व ही मेरा कैमरा उन जैसी महान् हस्ती को कैद करने के लिए मचल उठा। ठसा-ठस भरे सभागृह में मैं क्लिक दर क्लिक किए जा रहा था तभी विचार आया क्यों न ये फोटो बनवा कर तनवीर साहब को भेंट किए जाएं। मंच से उतरते ही मैने एलबम तनवीर साहब को भेंट की। पहले तो वे अचम्भित हुए व बाद में एक-एक फोटो देखते हुए प्रसन्नता से भर गए। सभी फोटो देखने के बाद मेरी पीठ थपथपाते हुए आशीर्वाद दिया, "Well-done keep it up" ये प्रेरणादायक शब्द व आशीर्वाद पाकर मन को बहुत ही सन्तोष मिला। उस दिन के बाद से अन्य कलाकारों को भी इसी अन्दाज में फोटो खींच कर भेंट करने का सिलसिला शुरू हो गया, जो आज दिन तक जारी है। इस दौरान फोटो भेंट करने के बाद जो प्रतिक्रियाएं मिली वो मेरे लिए इस कार्य को करने के लिए एक जबरदस्त प्रेरणादायी टॉनिक साबित हुई। ... और यह कारवां कलाकारों को जयपुर छोड़ने से पूर्व फोटो भेंट करने से लेकर फोटो प्रदर्शनियाँ लगाने तक जा पहुँचा। चैम्पियन्स ट्राफी क्रिकेट प्रदर्शनी से लेकर संगीत सम्राट पं. जसराज की फोटो प्रदर्शनी तक का सफर इसी तरह लोगों को अपनी फोटोग्राफी कला द्वारा आल्हादित कर असीम आनन्द की अनुभूति प्रदान कर उससे स्वयं भी सराबोर होना रहा है। वो चाहे पं. शिवकुमार शर्मा को सीमित समय में स्कूटर पर भीड़ को चीरते हुए स्टेज पर ही फोटो एलबम भेंट करना रहा हो या हवाई अड्डे तक दौड़ते हुए, कबीर नाटक के नायक श्री शेखर सेन हो या प्रोग्राम समाप्त कर होटल पहुँचते ही शास्त्रीय गायिका शुभा मुद्गल को फोटो भेंट करना हो या तत्कालीन राज्यपाल व पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल हो। महामहिम जब पिंकॉक गार्डन मालवीय नगर में उसका अवलोकन करने आयीं व घण्टे भर बाद वापिस शाम को पिंकॉक गार्डन निहारने पहुँची तो एक घण्टे पूर्व खींचे फोटो उन्हें भेंट किए तो वो काफी प्रसन्न नजर आई।

तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को जब मेरे सबसे चर्चित ग्रीटिंग पिंकॉक गार्डन का पोस्टर बना भेंट किया तो वे कह उठीं "अरे वाह इस फोटो में तो मेरा जयपुर सिंगापुर नजर आ रहा है।" कलकत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय बैले डांसर बन्दोपाध्याय ने कभी कहा कि इतने सुन्दर फोटो तो आज तक किसी ने भी नहीं खींचे थे। बैले डांसर पर आधारित एक फोटो प्रदर्शनी भी मैंने जे.के.के. में 2007 में लगाई थी, जो कलात्मक फोटोग्राफी के लिहाज से बेहद सफल रही थी। उन्होंने ऑटोग्राफ बुक में लिखा भी था कि तुम वास्तव में एक कमाल के आर्टिस्ट हो। कबीर के नायक शेखर सेन ने लिखा, प्रिय बन्धु महेश जी! आप इसी तरह भावनात्मक क्षणों को अमरत्व प्रदान करें, यही कामना है। इसी तरह पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. राजन साजन मिश्र, रमा वैद्यनाथन, उ. शाहिद परवेज, फारूक शेख, रानू मजूमदार, गिरीजादेवी, किशोरी अमोनकर से लेकर भारतीय पोलो कप्तान अंगद कलान, ललित मोदी व शाहरूख खान तक को मेरे कैमरे ने रोमांचित किया है।

पण्डित शिवकुमार शर्मा का वाक्य मुझे हमेशा प्रेरित करता है। जब उन्होंने स्टेज पर ही फोटो एलबम पाकर कहा था कि मैं पिछले लगभग 30 वर्षों से विश्व के हर कोने में जा रहा हूँ, परन्तु यह कारनामा जयपुर ने किया है। हार्दिक बधाईयां। इसी तरह जब एक वर्ष में दो बार शुभा मुद्गल जी जयपुर प्रोग्राम देने पहुँची तो दोनों ही बार मैं प्रोग्राम के तुरन्त बाद उनसे भी पहले उनके होटल फोटो भेंट करने के लिए खड़ा था, जिसे देख वे रोमांचित थी। तीसरे ही दिन उन द्वारा भेजा ऑटोग्राफ वाला फोटो पाकर मैं चकित था। यही नहीं कुछ समय बाद एक दिन शुभा जी का फोन आता है। "मैं शुभा मुद्गल बोल रही हूँ। आपने मेरे दो बार जयपुर आगमन पर जो फोटो मुझे भेंट किए थे वे मुझे बहुत पसन्द आए थे, अत: अब मैं अपना एक ब्रोशर बनवा रही हूँ, मुझे आशा है कि आपके पास और भी मेरे कुछ फोटो हो सकते हैं, क्या वे फोटो ई-मेल कर सकते हैं? मैंने तुरन्त अगले दिन ही १०-१२ फोटो ई-मेल कर दिये। उन्हें पाकर उन्होंने धन्यवाद के साथ मानदेय स्वरूप दस हजार का चैक मुझे भेजा जिसे पाकर मैं उनका एक फोटोग्राफर व उनकी कला की कद्र करने के कारण अभिभूत था क्योंकि इसके साथ-साथ यह भी कहा कि जहाँ-जहाँ ये फोटो काम आएंगे वहाँ-वहाँ आपका नाम भी साथ लगेगा।

फोटोग्राफी में लगभग 12-13 वर्ष समर्पित करने के उपरान्त, आज से लगभग चार वर्ष पूर्व पाया अर्थात् जाना कि फोटोग्राफी असरदायक व सीधे तौर पर दूसरों के दिल को छूने वाली कला है। इसे किसी भी भाषा व देश का बच्चे से लेकर बूढ़े तक ज्यों का त्यों उस फोटो के भावों सहित समझ सकते हैं। इस सन्दर्भ में फोटोग्राफी बहुत ही असरदायक कला के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। इसी को ध्यान में रखते हुए ही चार वर्ष पूर्व विश्व फोटोग्राफी दिवस जो कि 19 अगस्त को आता है, 2006 से लगातार इस दिवस को मानने के उपलक्ष्य मे फोटोग्राफी की खूबसूरती व विशेषताओं से अवगत कराने हेतु ही फोटो-प्रदर्शनियों का कारवां शुरू किया था, जो वर्तमान में भी जारी है।

विश्व फोटोग्राफी दिवस के अलावा भी मैंने फोटो प्रदर्शनियों का आयोजन जारी रखा है। उसी के तहत मार्च 2007 में विश्व कप क्रिकेट के शुभारम्भ जो कि वेस्ट इंडीज में होने जा रहा था, के अवसर पर जयपुर व राजस्थान के क्रिकेट प्रेमियों को रोमांचित करने के लिए व गौरवान्वित होने का मौका देने के लिए क्रिकेट फोटो प्रदर्शनी लगाई। मिनी विश्वकप कहे जाने वाले चैम्पियन्स ट्राफी के सेमीफाइनल मैच सहित सात मैचों का शानदार आयोजन कर कुछ समय पूर्व ही जयपुर गुलाबी नगर इसका गवाह बना था जिसमें विश्व की सभी टीमों ने जयपुर में मैच खेले थे। इससे ही अचानक जयपुर विश्व क्रिकेट के मंच पर छा गया था। एक महीने तक चले चैम्पियन्स ट्राफी के मैचों को एक स्वतन्त्र फोटो पत्रकार के रूप में कवर करने का रोमांचकारी अनुभव खिलाड़ियों के ड्रेसिंग रूम से लेकर वी.आई.पी. गैलेरी व मैदान के चारों तरफ होते हुए क्लिक दर क्लिक का सफर बहुत ही रोचक रहा। इसने मेरे अन्दर एक जबरदस्त आत्मविश्वास का संचार किया। स्वयं को एक चुनौती स्वीकार कर उसे सफलतापूर्वक पूरा करने व क्रिकेट फोटो प्रदर्शनी की सफलता ने उसे और परवान चढाया। क्रिकेट विशेषज्ञों ने विजीटर बुक में लिखा कि पिछले 35 वर्षों में ऐसी शानदार प्रदर्शनी नहीं देखी, यह प्रदर्शनी चैम्पियन्स ट्राफी के हर लम्हे की खूबसूरत याद दिलाती है। इसी कड़ी में माह फरवरी 2009 में संगीत सम्राट पं. जसराज द्वारा मेरी फोटो प्रदर्शनी का स्वयं के फोटो पर आधारित 'साक्षात्कार' कला प्रदर्शनी का उद्घाटन किया तो उन्होने कहा कि यह दिन मेरी जिन्दगी का सबसे सुखद दिन है। आज महेश ने मेरी जिन्दगी में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। मैं पण्डित जी का हाथ थामे उनके चेहरे की खुशी को देखकर अभिभूत व आल्हादित था। महेश ने मुझ अकेले पर प्रदर्शनी लगा कर अपना प्यार मेरे प्रति दर्शाया है।

उस रात सोते समय बार-बार पण्डित जसराज जी का खिला चेहरा सामने आ रहा था, उनकी अपार खुशी देखकर मन से सवाल कर रहा था कि पण्डित जी जिन्दगी में यह सुखद दिन इतने दिनों बाद क्यों आया, जल्दी क्यों नहीं।

– साभार : 'कलमकार' पत्रिका

समय और प्राप्ति को सामने रखो तो आलस्य और थकावट स्वत: ही मिट जायेगी।

पृष्ठ 1 का शेष...

महामना पंडित मदन मोहन ...

उनके परिवार की माली हालत ठीक न होने की वजह से हैरीसन कॉलेज के प्रिंसीपल ने उनके लिए मासिक छात्रवृत्ति की व्यवस्था की थी। छात्रवृत्ति मिलने की वजह से ही वह कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर सके। महज सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया था। यद्यपि वह संस्कृत में एम.ए. करने के बहुत इच्छुक थे, पर न तो उनके परिवार की माली हालत ठीक थी, और उनके पिता भी यह नहीं चाहते थे। वह चाहते थे कि मदनमोहन जी भागवद्पाठ को ही आजीविका का जरिया बनाएं। पर मालवीय जी ने शिक्षा के क्षेत्र को अपनाते हुए अपने आजीविका की शुरुआत इलाहाबाद जिला विद्यालय में बतौर एक शिक्षक की। इसी बीच उन्होंने पत्रकारिता भी की, 1887 जुलाई में उन्होंने शिक्षक की नौकरी छोड़ दी व नेशनलिस्ट वीकली के संपादक बन गए, फिर आपने इलाहाबाद से एलएलबी की उपाधि ली एवं तभी उन्होंने एक अंग्रेजी दैनिक पत्र इंडियन यूनियन की सहसम्पादक का कार्य भार संभाला। उसके बाद उन्होंने इलाहाबाद जिला कोर्ट एवं बाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत की।

सन् 1909, 1918, 1930 एवं 1932 में इंडियन राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहे। उनमें यह अद्वितीय व अनूठा गुणों का संगम था कि वह एक आम जन के चहेते राजनेता व साथ-साथ बहुजन सम्मानीय शिक्षाविद थे। देश की सेवा एवं शिक्षा के उत्थान एवं उपयोगिता को जन-जन तक पहुंचाने के अपने प्रण के प्रति वह इतने समर्पित थे कि उन्होंने अपनी जमी जमाई वकालत तक छोड़ दी।

1920 के असहोयग आंदोलन में उनकी महती भूमिका रही। साइमन कमीशन के विरोध में भी उन्होंने आवाज बुलंद की। महामना जी ने मुसलमानों के अलग से चुनावों की भी खिलाफत की तथा इसी विचार पर कांग्रेस की भागीदारी के भी विरोध में थे। देश के विभाजन की कीमत पर देश को आजादी दिलाने की गांधीजी की सोच के लिए उन्होंने गांधीजी को आगाह किया। वह इस सौदेबाजी के हक में नहीं थे। वर्ष 1939 में आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद से त्याग पत्र दे दिया था तब सर्वपल्ली राधाकृष्णनजी ने यह पदभार संभाला जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने।

पं. मदन महोन मालवीय जी ने ही 'सत्यमेव जयते' नारे को जन-जन में प्रचारित एवं प्रसिद्ध किया, जिसका अर्थ है सत्य की ही सदैव जीत होती है। 1924 से 1946तक आप अखबारों में अंग्रेजी अखबार हिंदस्तान टाइम्स के चेयरमैन भी रहे। आपने ही 1936में इसके हिन्दी संस्करण की शुरुआत की। महामना मालवीय जी ने मंदिरों से जाति प्रथा को खत्म किया। सबसे बड़ी पहल उन्होंने करीब 200 दलित लोगों को सर्वप्रथम 'कलाराम मंदिर में रथयात्रा के दिन प्रवेश कराकर की।' उनके इस पुण्य कार्य में हिन्दू दलित नेता श्री पी.एन. राजभोग ने भी साथ दिया। मंदिर में प्रवेश से पहले सभी ने गोदावरी नदी में स्नान किया और हिन्दी मंत्रों का जाप किया। मालवीया जी ने दलितों के हिन्दू मंदिरों में प्रवेश के लिए बहुत काम किया।

मालवीय जी के प्रति अपना आदर भाव व कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिए हिन्दुस्तान की अवाम ने दिल्ली, जयपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, भोपाल में रिहायशी इलाकों का नाम पर मालवीया जी के रखा है। कुछ शैक्षणिक संस्थाओं के नाम भी उनके नाम पर रखे गए हैं, जिनमें प्रमुख मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्यौगिक संस्थान जयपुर तथा मदन मोहन मालवीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय गोरखपुर हैं। देश के पवित्र तीर्थ स्थान हरिद्वार (हर की पौड़ी) में पवित्र गंगा की आरती करने की परिपाटी भी आपने ही शुरू की। उनके सम्मान में उसी गंगाघाट के सामने स्थित घाट को मालवीय द्वीप नाम से जानते हैं।

भारत के संसद भवन में भी आपकी आदमकद मूर्ति स्थापित की गई है, जिसका अनावरण पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने किया था। 1961 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के मुख्यद्वार पर भी एक मूर्ति स्थापित की गई, जिसे डॉ. राधाकृष्णन ने पं. मदन मोहन मालवीय जी की जन्म शताब्दी पर अनावरित किया था।

सन् 2011 में 150वीं जन्म शताब्दी प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में मनाई गई। दिल्ली में 2008 में 25 दिसम्बर को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम आजाद के हाथों द्वारा मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्रीय स्मारक का उद्घाटन किया गया।

मालवीय जी के सबसे छोटे पुत्र पं. गोविन्द मालवीय जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। उनके एक पौत्र की पत्नी श्रीमती सरस्वती मालवीय अपनी सुपुत्री के साथ इलाहाबाद में रहती हैं। पं. मालवीय जी के ही एक पौत्र पं. शशीधर मालवीय अमेरिका में रहते हैं। उन्हें आई.बी.एम. में कई खोजों का श्रेय जाता है। दूसरे पौत्र पंडित प्रेमधर मालवीय भारतीय पुलिस सेवा में डायरेक्टर जनरल रहे, बाद में राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में भी रहे। तीसरे पौत्र पं. लक्ष्मीधर मालवीय, ओसाका इंटरनेशनल विश्वविद्यालय में आचार्य हैं व चौथे पौत्र पं. गिरधर मालवीय इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायविद् हैं तथा 'भारतीय महामना मालवीय मिशन' के संस्थापक हैं। आपके प्रपौत्र डॉ. राजीव मालवीय इसी मिशन के अध्यक्ष हैं। आपकी एक पौत्री डॉ. मंजू मालवीय शर्मा को पद्मभूषण से नवाज़ा गया है। आजकल आप भारतीय शोध संस्थान की अध्यक्ष हैं, जो कि गांधीनगर गुजरात में स्थित है।

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने 12 नवंबर 1946 को भारत की सेवा में अपना जीवन अर्पित करते हुए 84 वर्ष की उम्र में पंचतत्व में अपनी देह विलीन कर इस नश्वर संसार से विदा ली।

आपका नाम अपनी सटीक, सुन्दर और परोपकारी सोच और देश की प्रगति के पथ पर अपने योगदान की वजह से सदा अमर रहेगा। हम उनके इन्हीं प्रयासों व जन्मभूमि को कर्मभूमि बनाने के प्रतीक के तौर पर सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

क्रमशः अगले अंक में पढ़िये मालवीय जी के कुछ चुनिंदा संस्मरणों का लेखा-जोखा।

- डॉ. ज्योति जोशी
(सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग)

उलझन और विश्वास

यूं ही उठ गए यूं ही चल पड़े
रास्ते है कुछ धुंधले से,
नज़र साफ कुछ आता नहीं,
जब सोये थे हम, ख्वाब देखा करते थे,
खुला आसमां है जैसे,
अपनी उड़ान देखा करते थे।
जब जागे ख्वाब से, बिना सोचे बस
यूं ही उठ गए, यूं ही चल पड़े।
रास्ते खुद तलाशने होंगे,
देखना होगा, समझना होगा,
तरकीब से आगे बढ़ना होगा।
मंजिलें क्या होंगी,
क्या उनकी ऊँचाई होगी?
ख्वाबों की उड़ान में
मंजिल की झलक भी लानी होगी।
आसां नहीं सफर-ए-जिंदगी,
अब तक तो ये जान चुके,
अनजाने से मोड़ मिलेंगे
इतना तो पहचान चुके।
हर मोड़ खुद के और करीब लाता है।
क्या हूँ मैं, कुछ नया मुझमें दिखलाता है।
मेरे भाव, मेरे शब्द, मेरा अन्तरमन
क्यों बदल जाता है, हर नए मोड़ पर
कब मैं खुद को जान पाऊँगी?
ये सब यूं ही चलता रहेगा
इतना भी समझ चुकी हूँ मैं,
पर वो ईश्वर होगा साथ हर दम,
इसी विश्वास से..
बस यूं ही उठ गयी,
यूं ही चल पड़ी हूँ मैं।

- ऋचा शर्मा
एम.टेक., रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग

21वीं सदी में हिन्दी की हक़ीकत और संभावनाऐं

गतांक का शेष ...

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं एवं अपने विचारों को किसी दूसरे के सामने व्यक्त करते हैं। दूसरों की भावनाओं और विचारों को समझते हैं। शायद इससे अलग भाषा की कोई परिभाषा है भी नहीं। आज तक हम अपने देश में हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सके। हमारे गाँवों के बच्चे आज भी मेडिकल कॉलेजों और इंजिनियरिंग कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सपना आसान नहीं समझते क्योंकि ऐसी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है।

इस प्रकार हम न केवल देश की जनता के एक बड़े भाग को उच्च शिक्षित होने से रोकते हैं बल्कि देश की उन्नति में भी बाधा खड़ी करते हैं। चीन, ताईवान, कोरिया, जापान, जर्मनी आदि देशों के विकास का कारण यही है कि इन देशों में शिक्षा का माध्यम अपनी भाषाऐं है। इन देशों के छात्रों को अपना बहुमूल्य समय और मानसिक शक्ति एक विदेशी भाषा को सीखने में व्यय नहीं करनी पड़ती है। वहाँ अंग्रेजी किताबों से अनुवादित ज्ञान सर्वसाधारण के लिऐ उपलब्ध है।

विख्यात वैज्ञानिक जयन्त नारलीकर, जिन्होने हिन्दी में अनेक उपयोगी किताबे लिखी है का मानना है कि ''वैज्ञानिक शोध में एक स्थिति ऐसी आती है। जब विदेशी भाषा अपर्याप्त साबित होती है, तब हमें मातृभाषा को अपनाना पड़ता है।'' और यह सच भी है कि ऐसे समाज में जहाँ भाषा और विज्ञान का आपसी सम्बन्ध प्रगाढ़ ना हो तब तक विज्ञान में मौलिकता का विकास नही हो सकता। रूस, फ्रांस, चीन और जर्मनी जैसे देशों ने अपनी मातृभाषा और वैज्ञानिक विकास के बीच एक क्रमबद्ध तालमेल विकसित किया जो इनके विकास की वजह बना। इस सन्दर्भ में हम फ्रांसीसी लोगों से कुछ सीख सकते है। वे अपनी मातृभाषा से प्रेम करते है। और बडी मेहनत से विश्वभर में इसका प्रचार-प्रसार करते है। उनके चहाँ फ्रेंच के विकास के लिऐ एक अलग से मंत्री होता है जिसे फ्रांकोफान मिनिस्टर कहते है।

हिन्दी के सिर पर पैर रखकर अंग्रेजी की पैरवी करने वालों को अंग्रेजों से एक बात यह भी सीखनी चाहिऐ कि हर देश में अंग्रेजी दूतावास के साथ अंग्रेजी प्रचार विभाग होता है। हमारे विदेश स्थित कितने दूतावासों में ऐसे हिन्दी प्रचार विभाग है? हमारे आधुनिक साहित्यकारों को केन्या के उपन्यासकार नागुगी वा व्यांगों का अनुसरण करना चाहिऐ जिन्होंने अंग्रेजी में लिखना बन्द कर गिकुमू और स्वाहिली जैसी अफ्रीकी भाषाओं में लिखना शुरू किया, उनका कहना है कि ''एक लेखक का यह मानना कि यूरोपीय भाषा के बिना अफ्रीका नहीं चल सकता उसी प्रकार है जैसे एक राजनितिज्ञ कहे कि बिना विदेशी शासन के अफ्रीका नहीं चल सकता।''

भाषा केवल शिक्षा का माध्यम ही नहीं है, यह संस्कृति का भी माध्यम होती है। अंग्रेजी का अंधानुकरण हमें असंगत जीवन शैली की ओर जा रहा है। आज विदेशी भाषा और संस्कृति प्रेम से हम भारतीय मूल्यों को खतरे में डाल रहे है। विदेशी भाषा के सामने हिन्दी को कमजोर समझना एक बहुत बड़ी भूल होगी। हमें भारतीय संस्कृति के विकास के लिऐ प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दी का विकास करने की आवश्यकता है लेकिन यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि हिन्दी का संघर्ष सिर्फ अंग्रेजी से है। स्थानीय भाषाओं से नहीं अंग्रेजी ही हिन्दी के वर्चस्व की बाधा है।

यह प्रस्तावित किया गया है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का अधिकार दिया जाऐं। जैसे ही कोई अधिकार दिया जाता है। कर्त्तव्य अपने आप निर्दिष्ट हो जाते है। कर्तव्य पुनः अधिकारों का सजृन करते है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। ''**किसी भी भाषा के राष्ट्रभाषा के रूप में चिह्नित होते ही उसके दायित्वों में वृद्धि हो जाती है, अब यह केवल संवाद का माध्यम नहीं रह जाती है बल्कि समुचे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व विश्व के सामने करती है।**'' कभी भी भाषा का सम्बन्ध केवल साहित्य से नहीं होता है। साहित्य तो भाषा का एक पक्ष मात्र है। साहित्य समाज को मानवता के दृष्टिकोण से चिंतन मनन को बाध्य करता है जबकि भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक है।

वर्तमान काल में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। दक्षिण भारत जो कभी हिन्दी का विरोधी था वहाँ आज लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग शुरू हो चुके है। दक्षिण भारत के साहित्य के साथ-साथ दक्षिण भारतीय फिल्मों का भी बड़ी तेजी से हिन्दी अनुवाद हो रहा है। अब यह तर्क बहुत बौना साबित हो रहा है कि भारत बहुभाषायी देश है यहाँ हिन्दी का अधिपत्य नहीं हो सकता। 1960 के दशक तक रूस में भी दो भाषायी सम्प्रदाय थे। एक पर पाश्चात्य का प्रभाव था तो दूसरे पर स्थानीय स्लोवानिक शब्दों और भाषा रचना का। स्लोवानिक सम्प्रदाय की संरचना कठिन थी और प्रयोग कम होने के कारण जानने वाले कम थे। लेकिन रूस ने एक शिक्षा आन्दोलन चलाकर इस समस्या हो हल कर लिया। हमें भी इससे सीख लेनी चाहिए। दक्षिण भारत भी भाषाओं को समानता का दर्जा देते हुऐं दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना चाहिऐं। हिन्दी के प्रोत्साहन हेतु इसे सपूर्ण भारत में अनिवार्य विषय के रूप में लागू किया जाना चाहिए।

सरकारी काम-काज में अधिक से अधिक हिन्दी का उपयोग होना चाहिऐ ताकि हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा मिले। बैंक शैक्षणिक संस्थाऐं, सामाजिक संगठन, औद्योगिक संगठन सबको मिलकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहयोग देना होगा। और अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में भी हिन्दी को ऐच्छिक विषय के तौर पर संचालित करने की आवश्यकता है ताकि छात्र हिन्दी ज्ञान से जुड़े रहें। मीडिया का भी इसमें बहुत योगदान हो सकता है। जैसा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी दक्षिण भारतीय संवाददाता हिन्दी में बोलते दिखायी देते है। हिन्दी भाषा ने व्यवसायिकता के आधार पर भी काफी सम्मान पाया है लेकिन इससे भी और आगे जाने की आवश्यकता है। व्यवसायिकता के इस दौर में हिन्दी विश्व परत पर अपने कदम बढ़ा रही है। हाल ही में 14 सितम्बर के मोके पर ट्वीटर ने अपनी बेवसाइट का हिन्दी संस्करण जारी किया है। अमेरिका ने भी एशियाई देशों की राष्ट्रभाषा सीखने हेतु अपने अकादमिक जगत को निर्देशित किया है जिसमें हिन्दी का प्रमुख स्थान है यह सब हमारे लिऐ गर्व की बाते है। लेकिन साथ-साथ शर्म की बात भी है कि हिन्दी के साथ ''घर की मुर्गी दाल बराबर'' जैसा बर्ताव हो रहा है। इतना सब होने के बावजूद हिन्दी को अपना अपेक्षित स्थान प्राप्त करने में वक्त लग रहा है। ऐसा क्यों? जबकि अंग्रेजी के साथ ऐसा नहीं है फिर किस वजह से वह भारतीय मानस पर छाती जा रही है?

अंग्रेजी भाषा आधुनिक ज्ञान की प्रबल संवाहक है। इसलिऐ ज्ञानात्यक क्षेत्र में इसका विस्तार है। इसी तरह अगर हिन्दी भी मौलिक ज्ञान से जुड़ती है तो वह विकास के उच्चतम स्वरूप को प्राप्त कर सकती है। ज्ञान मनुष्य के समस्त नयी चुनौतियाँ खड़ी करता है। नयी चुनौतियाँ - नयी परेशानियाँ नया भाव संसार, नया भाव-संसार - नयी संवेदना। और इन नयी संवेदनाओं के विस्तार के लिऐ नया भाषा संसार चाहिये अर्थात नयी शब्दावलियाँ भी। नयी शब्दावलियाँ भाषा के स्वरूप को परिवर्तित करती है। प्राकृत भाषा से लेकर आज की हिन्दी तक का विकास इन्ही परिवर्तनों को दर्शाता है। किन्तु स्वतंत्रता के वाद जबसे हिन्दी भाषा को संरक्षित किया गया है। हिन्दी नये ज्ञान से दूर हटती गई है समय के साथ-साथ भाषा अपने प्रतिमान एवं पारिभाषिक शब्दावलियाँ बदलती जाती है। नये शब्दो का जुड़ाव और नये ज्ञान से परिचय समय की मांग होती है। और इसी माँग के अनुसार भाषा का चोला होता है।

राष्ट्रभाषा महासंघ के मुंबई में सन् 1999 में हुऐ राष्ट्रीय सम्मेलन में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि हिन्दी न केवल संस्कृत से बल्कि लोक भाषाओं से भी प्रमुखतः अपनी शब्दावली समृद्ध करेगी। हमें हिन्दी भाषा को न केवल साहित्य से बल्कि ज्ञान से भी जोड़ना होगा तभी हिन्दी को अपेक्षित स्थान मिलेगा।

चिकित्सा क्षेत्र हो या अभियाँत्रिकी क्षेत्र, सरकारी हो या निजी, कला क्षेत्र हो या विज्ञान हमें सारे क्षेत्रों की मांगों के अनुसार हिन्दी को समृद्ध करने का अवसर नहीं चूकना चाहिऐ। हमे संकल्प लेने चाहिये कि हम भारत के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक सभी क्षेत्रों के अनुसार हिन्दी भाषा को समृद्ध करने का प्रयास करेगें। 21वीं सदी में यही सच्ची राष्ट्रभक्ति होगी।

संकलन - **लोकेन्द्र शिव**
पंचम वर्ष, वास्तुकला विभाग

विपत्तियों को सहने का बल केवल भगवान की याद से ही मिलता है।

कुरआन : सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अन्तिम मार्गदर्शन

इस धरती पर मौजूद लगभग सभी बड़े धर्मों में एक बात पर पूर्ण सहमति है वह यह कि सम्पूर्ण मानव जाति एक ही मां-बाप की संतान हैं। ईसाई धर्म, यहूदी धर्म एवं इस्लाम में उस पहले मानव जोड़े के नाम स्पष्ट रूप से आदम व हव्वा (Adam & Eve) हैं अन्य धर्मों की पुस्तकों में नाम अलग हो सकते हैं मगर इस पर एक मत है। इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है, जिसका एक अर्थ 'शान्ति' है, और दूसरा ''ईश्वरीय आज्ञाओं एवं आदेशों के आगे सम्पूर्ण समर्पण''। इस्लाम के अनुसार पहले मानव यानि 'आदम' ईश्वर के संदेश वाहक या पैग़म्बर भी थे, उन्हें इस्लाम का पहला पैग़म्बर कहा जाता है। ईश्वर ने उन पर ज्ञान का प्रकाश अवतरित कर धरती पर इस जीवन के लिए मार्गदर्शन दिया, जिस पर उन्होंने स्वयं भी अमल किया और अपनी संतानों को भी यह ज्ञान पहुंचाया। आदम के बाद (शायद कुछ हज़ार बरसों बाद), नूह नाम के बड़े पैग़म्बर हुए। ईश्वर ने उनके माध्यम से उस वक्त मौजूद मानव जाति को ईश्वरीय संदेश (मार्गदर्शन) पहुंचाया। जब मानव जाति इतनी विकसित हो गई कि उसने लिखने-पढ़ने की कला विकसित कर ली तब ईश्वरीय संदेश पुस्तकों की शक्ल में ईश्वरीय संदेष्टाओं (पैग़म्बरों) पर अवतरित होने लगा। धरती के हर भाग में हर काल में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए ईश्वरीय संदेश वाहक)नबी या पैग़म्बर) आते रहे। लगभग सवा लाख ईश्वरीय संदेश वाहक जो इन्सानों ही में से चुने हुए इन्सान थे आये और उन सब ही ने ईश्वर के आगे समर्पण (यानि इस्लाम) का संदेश दिया। उनमें से कुछ प्रसिद्ध पैग़म्बर इब्राहीम (Abraham), याकूब (Jacob), इस्माईल (Ismael), इसहाक (Issac), मूसा (Moses), युसुफ (Joseph), दाऊद (David), ईसा (Jeasus) और अन्तिम पैग़म्बर मुहम्मद हैं। ये सब एक ही संदेश लाए, अपने-अपने ज़माने और इलाके के लिहाज़ से भाषाएं अलग-अलग थीं, मगर संदेश एक ही था।

हजरत मूसा नाम के पैग़म्बर (जिनके नाम से बाद में यहूदी धर्म बना) पर तोरेत (Torah) नाम की किताब अवतरित हुई इसे Old Testament भी कहा जाता है। मूसा का काल आज से करीब 3000 वर्ष पहले का माना जाता है। यह संदेश जब पूर्ण रूप से सुरक्षिश्त न रह सका तो करीब 2000 साल पहले ईसा पर यह संदेश अवतरित हुआ। इस किताब का नाम इन्जील (या Bible) है, जब यह संदेश भी पूरी तरह सुरक्षित न रहा तो करीब 1400 साल पहले, इस्लाम के अन्तिम पैग़म्बर पर कुरआन के रूप में सारी मानव जाति के लिए अन्तिम मार्गदर्शन अवतरित हुआ। कुरआन में वहीं संदेश है जो आदम से लेकर ईसा तक सवा लाख संदेष्टाओं ने मानव जाति को दिया। यह संदेश किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है। कुरआन किसी व्यक्ति की रचना या उसके विचार नहीं हैं। हजरत मुहम्मद साहब यह जिबरील नाम के फरिश्ते के माध्यम से अवतरित हुआ। इसका हर शब्द ईश्वर की ओर से है। यह ईशवाणी है। इसमें कुछ घटाने या बढ़ाने का अधिकार किसी को नहीं है। पैग़म्बर मुहम्मद साहब को भी नहीं, क्योंकि यह उस सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से है, जो सि सृष्टि का और हम सब का सृष्टा है। उसका ज्ञान भी असीमित है और वह भी किसी सीमा में बंधा नहीं है। इस पुस्तक का केन्द्रीय विषय 'मानव' है, यह पुस्तक बताती है कि हमारा सृष्टा कौन है और वह हमसे इस धरती पर कैसा जीवन बिताने की अपेक्षा रखता है।

मुहम्मद साहब अरब में पैदा हुए, इसलिये अवतरण अरबी भाषा में आया। इन्सान ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है और सारी भाषाएं उसी ईश्वर की हैं। मुहम्मद साहब लिखना पढ़ना नहीं जानते थे। वे इस संदेश को पूरी तरह याद करते और फिर लिखवाते।

यह मार्गदर्शन थोड़ा-थोड़ा करके 23 सालों में पूरा अवतरित हुआ। इसमें 114 अध्याय हैं, जिन्हें सूरा कहा जाता है। इसके वाक्यों को 'आयत' (यानि ईश्वर की निशानी) कहा जाता है। कुरआन में 6666 आयते हैं। मूल किताब अरबी भाषा में है, मगर अब इसका अनुवाद दुनिया की हर भाषा मं और भारत की सभी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में मौजूद है। इस पूरी पुस्तक में मूल संदेश यह दिया गया है कि सारे इन्सान एक ही मां-बाप की संतान है और उनमें कोई छोटा-बड़ा, ऊंचा-नीचा नहीं है। ईश्वर एक ही। उसी की इबादत (पूजा, आराधना) और बन्दगी होनी चाहिए। उसके जैसा और उसका समकक्ष कोई नहीं है। यह जीवन एक परीक्षा है, मृत्यु के बाद एक अनन्त जीवन है जिसे परलोक (Hereafter) कहा गया है। ईश्वर की बन्दगी और उसके आगे सम्पूर्ण समर्पण का जीवन बिताने वालों से सृष्ठा प्रसन्न होगा और उन्हें स्वर्ग (जन्नत या Pardise) में जगह देगा। उसका इन्कार करने वाले और उसकी आज्ञाओं की अवहेलना करने वालों को नरक (जहन्नम या Hell) में डाला जाएगा। इस सत्य को इस पुस्तक में मानव पर स्पष्ट किया गया है और ईश्वर के आगे सम्पूर्ण समर्पण के रास्ते को विस्तार से समझाया गया है। यह किताब सारी मानव जाति को गरिमामय स्थान देने, उसे एकता के सूत्र में पिरोने और सत्य की ओर मार्गदर्शन करने वाला प्रकाश है।

- मोहम्मद सलीम
सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
वैद्युत वणिकी एवं संचार अभियांत्रिकी विभाग

आदर्श विद्यार्थी के लक्षण

भारतवर्ष में आदिकाल से गुरू-शिष्य परंम्परा स्थापित रही है। गुरू का स्थान ईश्वर से भी उच्च माना गया। एक आदर्श गुरू जहाँ शिष्यों को अपना समस्त ज्ञान प्रदान करना चाहता है, वही शिष्यों का भी परम कर्तव्य है कि अधिकतम ज्ञान को ग्रहण कर लेवें। किंतु शिष्यत्व की पात्रता भी आवश्यक है। गुरू शिष्य परंपरा कालांतर में शिक्षक विद्यार्थी संबंधों के रूप में उद्भाषित हुई।

ज्ञानर्जन कठिन कार्य है। एक विद्यार्थी के रूप में केवल ज्ञान प्राप्त करना ही एक मात्र ध्येय लेना चाहिए। प्राचीन ग्रन्थों में एक आदर्श विद्यार्थी के लक्षण निरुपित किए गए है।

'काकचेष्टा', अर्थात् कौए के समान चेष्टा करना। जिस प्रकार कौआ अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयास करता है। उसी प्रकार एक विद्यार्थी को अपने विषयों के अध्ययन में निंरतर प्रयास करते रहता चाहिए। एक बार में लक्ष्य प्राप्त न होने पर निराश न होकर पुनः अधिक प्रयास से विद्याध्ययन में जुट जाना चाहिए।

'बको अध्यान्' अर्थात् बगुले की भांति लक्ष्य का निंरतर ध्यान। सरोवर में बगुला एकटक, मानो जड़वत ध्यानपूर्वक स्थिर खड़ा रहता है। एवं अपने लक्ष्य अर्थात् भोज्य पदार्थ मछली के निकट आते ही उस पर झपट कर उसे प्राप्त कर लेता है। एक आदर्श विद्याथी को भी पूर्ण एकाग्रचित एवं दत्तचित्त होकर अपने अध्ययन के विषयों को ग्रहण करना चाहिए।

'श्वान निद्रा', अर्थात् कुत्ते के समान निद्रा। एक श्वान भले ही आँखे मूंदे हो, किंतु थोड़ी आहट से ही चौकन्ना होकर आँखें खोल देता है। विश्राम अवश्य करता हैं किंतु नींद को हावी नहीं होने देता। एक विद्यार्थी को भी सदैव सजग रहना चाहिए तथा अति निद्रा से बचना चाहिए। विद्या प्राप्ति के लक्ष्य का निरंतर स्मरण रहने से, अल्प निद्रा में ही विश्राम प्राप्त हो सकता हैं एवं सजगता भी उपलब्ध हो सकेगी।

'अल्पाहारी' अर्थात् कम भोजन करने वाला। जैसा कि विदित है, शरीर व मन का गहरा संबंध होता है। आवश्यता से अधिक भोजन करने पर शरीर भारी होता है, जिसका असर तन्द्रा व निद्रा के रूप में मन पर भी पड़ता है। शारीरिक क्रियाओं हेतु आवश्यक ऊर्जा प्राप्ति के लिए निर्धारित भोजन ही ग्रहण करना चाहिए। केवल स्वाद के वशीभूत होकरअधिक भोजन करने से शरीर व मन पर विपरीत प्रभाव उत्पन्न होता है एवं लक्ष्य प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

'गृहत्यागी', अर्थात् घर का त्याग करने वाला। भावार्थ यह कि अपने घर पर माता-पिता, भाई बहिन आदि संबंधियों के प्रति आसक्ति का त्याग करने वाला। आसक्ति व्यक्ति का ध्यान बंटा देती है। विद्यार्थी काल में घर के प्रति मोह होने से, विद्यार्जन में बाधा पहुँचेगी तथा अध्ययन में आवश्यक एकग्रता उपलब्ध नहीं हो पाएगी इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि घर पर माता-पिता आदि के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाएं। आवश्यकता होने पर अवश्य हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना है किंतु प्रथम सोपान विद्यार्थी के रूप में अध्ययन अथवा शिक्षा-प्राप्ति होता है। एक विद्यार्थी के रूप में कितनी एकाग्रता से कितनी गहराई से एवं कितनी समग्रता से ज्ञान व अनुभवों को ग्रहण किया गया इसी पर आगामी जीवन निर्धारित होता है। विद्यार्थी जीवन में ही मनुष्य के भावी जीवन की नींव बनती है।

समय तीव्र वेग से प्रवाहमान है व सीमित है पर प्राचीन ऋषियों के ज्ञान व निर्देशों को अपनाने की आवश्यकता असीमित है। सभी विद्याथियों का उपरोक्तानुसार स्वयं का प्रबंधन करके ज्ञान से परिपूर्ण होकर स्वयं, परिवार व राष्ट्र निर्माण में उच्चतम आयाम स्थापित करना चाहिए।

- **दीपेश सोनार,** शोधार्थी, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

जीवन को संवार दो

अपेक्षा नहीं कि तुम मुझे,
स्वनिल व गुदगुदाते क्षणों का श्रृंगार दो।

चल सकूं अविरल और पहुँच सकूं उस छोर तक
संघर्ष के, ऐसे यथार्थ का, एक ठोस सा आधार दो।

महक अधखिले कुसुमों को पाने की,
उठी नहीं चाह मन में।
और मंजुलता मधुबन की, नहीं चाही थी
बंधी समय और ठौर की परिधि में।

शूलों की चुभन के, मीठे दर्द का एहसास
और सौंधी माटी में उगे उपवन का शाश्वत प्यार दो।

बना दिया धारा ही मुझे तो, बहाकर, उछाल कर
मत फेंको किनारों की तरफ दलदल में बदलने को।

है चाह यही कि तुम मुझको सागर तक पहुँचाने का,
पाने को लक्ष्य अपना, विश्वास युक्त एक आधार दो।

बस, अपेक्षित देकर तुम,
बिखरे हुए जीवन को संवार दो।

- दीप सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष

अनाम रिश्तों का ताना बाना "सोशल नेटवर्किंग"

सपनों की दुनिया सदैव ही रोमांचक और फंतासी होती है। आज के समय में सोशल नेटवर्किंग से जुड़ना अधिकांश युवाओं और किशोरों की पंसद बनता जा रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स अनेक लोगों से जुड़ने और अपने विचारों की अभिव्यक्ति और आदान प्रदान करने का अनोखा मंच है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स की अपनी एक अलग दुनिया है। यह दुनिया अपने आप में इतनी मायावी और आकर्षक है कि इसके चक्रव्यूह में फंसकर एकाकी होना नियति बन जाती है। मोबाइल फोन, लैपटाप और सोशलनेट वर्किंग साइट्स से घिरा यूजर वैश्विक दुनिया का तो सदस्य है किन्तु अपनी वास्तविक दुनिया, परिवार और समाज से कटा हुआ है। कम्प्यूटर पर एकाकी समय बिताने वाले यह अनुभव करने लगे हैं कि वे समाज की एक श्रृंखला से जुड़ते जा रहे हैं। यदि वो किसी समस्या को लिखेंगे तो सारी श्रृंखला में उसकी प्रतिक्रिया होगी किन्तु ये नहीं सोचा है कि प्राप्त प्रतिक्रियाएँ सदैव उपयोगी होंगी या नहीं? इस आभासी दुनिया की रंगीनियत बेहद सतही है। यहाँ बनने वाले मित्रता के रिश्ते उम्रभर के लिए स्थायी नहीं हैं। सोशल नेटवर्किंग साइटस के माध्यम से कई बार इसके यूजर्स बडी ही बेबाकी से अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं जो कई बार आधारहीन ही नहीं बल्कि अपनी सीमाओं को भी पार कर जाता है। ये ही एक नकारात्मक पक्ष है जिस पर नकेल कसना अंसभव सा प्रतीत होता है। यदि कोई भी इस नेटवर्किंग के हिस्से की गहनता और आदतन श्रृंखला बना है तो इसका परित्याग ही संरक्षणात्मक उपाय है। अनाम रिश्ते सदैव अस्थायी और आभासी होते हैं। संभव है जिसकी प्रदर्शित पहचान से यूजर जुड़ा है वो काल्पनिक हो, आभासी हो और उनकी भावनाओं और कल्पनाओं का शोषण कर रही हो।

समाज की श्रृंखला से जुड़ने का एक और विकल्प है साहित्य के माध्यम से विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति। इसके लिए डायरी लिखना, पत्र पत्रिकाओं को पढ़ कर प्रतिक्रिया लिखना या स्वतंन्त्र रूप में कविता, कहानी अथवा लेख लिखने का प्रयास करना, संचार माध्यमों के जरिये अपने विचार व्यक्त करना, संगोष्ठी आयोजित कर लोगों के विचार जानना इत्यादि तरीके जो कि स्थायी और असरदार हैं।

भावनाओं की अभिव्यक्ति किसी को भी लेखन के माध्यम से ना केवल सृजनात्मक श्रेणी में खड़ा कर सकती है अपितु उसके साहित्य को समाज पठनीय और संकलनीय स्तर तक पहुँचा सकती है।

- अंशु सक्सेना
स्थापना, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग

धर्म–प्रेम–शान्ति

धर्म, प्रेम और शान्ति जिस आंगन में रहती हैं, वहीं, गंगा यमुना सरस्वती तीनों नदियाँ बहती हैं।
बागानों में खलिहानों में दाना-दाना चरती है, डाली-डाली कोयल कूके भेद दिलों का हरती है।
छप्पर में भी चूल्हा जलता, रोटी की खुशबू आती है, सिर बट्टे पर चटनी पिसती वो भी मन को भाती है।
घर संसार नहीं बनता लकड़- पत्थर की दीवारों से, अपराधों की गन्ध है आती इन ऊँची मीनारों से।
ये उजले-उजले मुखड़े पर दिल जिनके काले हों, धन लक्ष्मी का टोटा होता जहाँ मदिरा के प्याले हों।
पिता - पुत्र में झगड़ा होता गाली की बौछार हुई, नयनों से गिरता टप-टप पानी माता भी शर्मोसार हुई।

पुत्र, पिता के पैर छुये परिणाम भया भारत के संस्कारों का,
धर्म प्रेम और शान्ति जहां बसती है उद्धार भया उन परिवारों का।

- सत्यराज सिंह त्यागी
आशुलिपिक, निदेशक कार्यालय

सफलता वह योग्यता है, जिसे हम बिना उत्साह खोये, हार को स्वीकार कर प्राप्त करते हैं।

प्रकाशक एवं सम्पादक डॉ. ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, 0141-2713550
ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com • सदस्य, सम्पादक मंडल : डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. राजकुमार व्यास, डॉ. कैलाश सिंह, श्री सुशान्त उपाध्याय, श्री अंशु सक्सेना
छात्र सदस्य : मुकेश धीमानी (रसायन अभियांत्रिकी), दिव्यांशु गोयल (वैद्युत अभियांत्रिकी) • छायांकन : श्री महेश स्वामी
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalaceindia.com